स्त्रियों के लिए एक विशेष शिक्षा

प्रिय मसीह में बहन, आपका स्वागत है। आइए, कुछ समय निकालकर एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर मनन करें:

क्या प्रभु ने आपके जीवन में कभी कोई महान कार्य किया है? शायद उसने आपको चंगा किया, आपको बंधनों से छुड़ाया, आपके लिए नए द्वार खोले, या आपको शांति और उद्धार प्रदान किया। आपने आनंद मनाया और धन्यवाद दिया—पर उसके बाद क्या हुआ?
क्या आप फिर अपने जीवन में आगे बढ़ गईं, या आपने एक कदम आगे बढ़कर उसकी सेवा करना शुरू किया?

अक्सर बहुत से विश्वासी केवल धन्यवाद तक ही सीमित रह जाते हैं। परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि सच्चा विश्वास कर्मों में प्रकट होता है (याकूब 2:17)। आज हम देखेंगे कि कैसे साधारण स्त्रियों ने—आपकी ही तरह—यीशु के प्रति केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अपने जीवन के द्वारा उत्तर दिया।

वे स्त्रियाँ जिन्होंने यीशु की सेवा की

सुसमाचारों में हम कई ऐसी स्त्रियों को देखते हैं जो न तो प्रेरित थीं, न पास्टर, और न ही कोई प्रसिद्ध व्यक्तित्व—फिर

भी उनकी भूमिका यीशु की सेवकाई में अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

मत्ती 27:55–56

“वहाँ बहुत-सी स्त्रियाँ दूर से देख रही थीं; वे गलील से
यीशु के पीछे-पीछे आई थीं और उसकी सेवा करती थीं।
उनमें मरियम मगदलीनी, और याकूब और योसेस की माता मरियम, और जब्दी के पुत्रों की माता भी थीं।”

ये स्त्रियाँ केवल दर्शक नहीं थीं। “उसकी सेवा करती थीं” का अर्थ है कि वे सक्रिय रूप से उसकी सहायता कर रही थीं। वे केवल सुनने के लिए नहीं, बल्कि उसकी सेवकाई को संभालने और उसमें भाग लेने के लिए उसके साथ थीं। वे अपने कार्यों से शिष्य थीं, भले ही उन्हें औपचारिक रूप से ऐसा न कहा गया हो।

उन्होंने जो कुछ था, वही अर्पित किया

लूका का सुसमाचार हमें और स्पष्ट रूप से बताता है:

लूका 8:1–3

“इसके बाद वह नगर-नगर और गाँव-गाँव फिरता हुआ परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने लगा; और बारहों उसके साथ थे।
और कुछ स्त्रियाँ भी थीं, जो दुष्टात्माओं और बीमारियों से चंगी की गई थीं—मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिससे सात दुष्टात्माएँ निकली थीं;
और योअन्ना जो हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी थी, और सुसन्ना, और बहुत-सी और स्त्रियाँ, जो अपनी संपत्ति से उनकी सेवा करती थीं।”

उन्होंने मंच से प्रचार नहीं किया, लेकिन उन्होंने सुसमाचार के कार्य को सहारा दिया। उन्होंने अपने संसाधनों, समय और प्रभाव का उपयोग यीशु और उसके चेलों की सहायता के लिए किया। यह हमें याद दिलाता है कि देना भी एक महत्वपूर्ण सेवा है (2 कुरिन्थियों 9:6–11)। परमेश्वर हमें केवल मंच पर नहीं बुलाता—वह हमें हर रूप में आज्ञाकारिता के लिए बुलाता है।

उन्होंने सेवा क्यों की?

इन स्त्रियों ने स्वयं यीशु की सामर्थ्य का अनुभव किया था—दुष्टात्माओं से छुटकारा, बीमारियों से चंगाई, और उद्धार की शांति। इसके उत्तर में उन्होंने केवल विश्वास नहीं किया,

बल्कि उसके पीछे चलने और उसकी सेवा करने का निर्णय लिया। सच्ची कृतज्ञता हमेशा कर्मों में दिखाई देती है (रोमियों 12:1)।

छोटी सेवाएँ भी अनमोल होती हैं

क्या आपको पतरस की सास की घटना याद है?

मत्ती 8:14–15

“जब यीशु पतरस के घर में आया, तो उसने उसकी सास को ज्वर से पीड़ित बिस्तर पर पड़ी देखा।
उसने उसका हाथ छुआ, और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उसकी
सेवा करने लगी।”

जैसे ही वह चंगी हुई, उसने सेवा करना शुरू कर दिया। उसने किसी पद, अवसर या निमंत्रण का इंतज़ार नहीं किया। उसकी प्रतिक्रिया तुरंत और व्यवहारिक थी। यही सच्ची सेवा का आदर्श है—सरल, सच्चा और जहाँ आप हैं वहीं से।

तो आप प्रभु की सेवा कैसे कर रही हैं?

क्या आप केवल अपने शब्दों से सेवा कर रही हैं, या अपने जीवन से भी?
परमेश्वर के लिए उपयोगी होने के लिए आपको किसी मंच या विशेष पहचान की आवश्यकता नहीं है। यदि आप एक स्त्री हैं—चाहे युवा हों या वृद्ध—अपने आप से ये प्रश्न पूछें:

क्या मैं अपने साधनों का उपयोग परमेश्वर के राज्य के लिए कर रही हूँ?
क्या मैं सेवकाइयों या ज़रूरतमंद विश्वासियों की सहायता करती हूँ?
क्या मैं अपने घर, अपने हाथों और अपने प्रभाव का उपयोग मसीह के लिए कर रही हूँ?

आप पौलुस की तरह पास्टर या पतरस की तरह प्रचारक नहीं हो सकतीं—लेकिन आप मरियम मगदलीनी या योअन्ना की तरह विश्वासयोग्य सहायक अवश्य बन सकती हैं। और परमेश्वर इसे देखता है। आपका नाम भी अनंतकाल में स्मरण किया जाएगा (इब्रानियों 6:10)।

जो कुछ भी आप प्रभु के लिए करती हैं—चाहे छोटा हो या बड़ा—वह सब कुछ देखता है। अपने विश्वास को अपनी सेवा के द्वारा प्रकट होने दें। जो कुछ आपके पास है, उसे अर्पित करें। दूसरों के लिए प्रार्थना करें। अपना घर खोलें। सुसमाचार के कार्य को सहारा

□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□

> “□□□□□□ □□ □□□□□□, □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□, □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□; □□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□”
> — □□□□□□□ *12:1*

□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp